

SHRI KRISHNA KRIPA KATAKSH

श्री कृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं,
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं,
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम्॥१॥

भावार्थ- व्रजभूमि के एकमात्र आभूषण, समस्त पापों को नष्ट करने वाले तथा अपने भक्तों के चित्त को आनन्द देने वाले नन्दनन्दन को सदैव भजता हूँ, जिनके मस्तक पर मोरमुकुट है, हाथों में सुरीली बांसुरी है तथा जो प्रेम-तरंगों के सागर हैं, उन नटनागर श्रीकृष्णचन्द्र को नमस्कार करता हूँ।

BHAJÉ VRAJEIK MANDANAM, SAMAST PAAP KHANDANAM SUBHAKT CHIT RANJANAM,
SADÉIV NAND NANDANAM SUPICHH GUCCHH MASTAKAM,
SUNĀD VENU HASTAKAM ANANG RANG SĀGARAM, NAMĀMI KRISHNA NĀGARAM(1)

Vraj mandal ké bhushan tatha samast paapo ké naash karné vaalé, sacché bhakt ké chitt mé vihaar kar anand dené vaalé, sacché Nand Nandan ka sarvada bhajan karta hu. Jinké mastak par manohar morpankho ké guttché hé, jinké haatho mé surilli murli hé, tatha joh prem tarango ké samudra hé, un Nat-Nagar Shri Krishna Bhagwan ko mera namaskar hé.

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं,
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं,
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्ण वारणम्॥२॥

भावार्थ- कामदेव का मान मर्दन करने वाले, बड़े-बड़े सुन्दर चंचल नेत्रों वाले तथा व्रजगोपों का शोक हरने वाले कमलनयन भगवान को मेरा नमस्कार है, जिन्होंने अपने करकमलों पर गिरिराज को धारण किया था तथा जिनकी मुसकान और चितवन अति मनोहर है, देवराज इन्द्र का मान-मर्दन करने वाले, गजराज के सदृश मत्त श्रीकृष्ण भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ।

MANOJ GARVA MOCHANAM, VISHĀL LOL LOCHANAM
VIDHOOT GOP SHOCHANAM, NAMĀMI PADMA LOCHANAM
KARĀR VINDA BHUDARAM, SMITĀV LOK SUNDARAM
MAHENDRA MAAN DĀRANAM, NAMĀMI KRISHNA VĀRANAM(2)

Kaam-dev ka garva naash karné vaalé, baddé baddé chanchal lochano vaalé, gvaal baalo ka shok nasht karné vaalé, Kamal Lochan ko mera namaskar hé. Kar-kamal par Govardhan Parvat dhaaran karné vaalé, muskaan yukt sundar chitvan vaalé, Indra ka maan mardan karné vaalé, Gajjraaj ké saddarsh matt, Shri Krishna Bhagwan ko mera namaskar hé.

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं,
व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया,
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्॥३॥

भावार्थ—जिनके कानों में कदम्बपुष्पों के कुंडल हैं, जिनके अत्यन्त सुन्दर कपोल हैं तथा व्रजबालाओं के जो एकमात्र प्राणाधार हैं, उन दुर्लभ भगवान कृष्ण को नमस्कार करता हूँ; जो गोपगण और नन्दजी के सहित अति प्रसन्न यशोदाजी से युक्त हैं और एकमात्र आनन्ददायक हैं, उन गोपनायक गोपाल को नमस्कार करता हूँ।

KADAMB SŪNU KUNDALAM, SUCHĀRU GAND MANDALAM
VRAJĀNG NEIK VALLABHAM, NAMĀMI KRISHNA DURLABHAM
YASHODAYĀ SAMODAYĀ, SAGOPAYĀ SANANDAYĀ
YUTAM SUKHEIK DĀYAKAM, NAMĀMI GOP NĀYAKAM(3)

Kadamb ké pushpo ké kundal dhaaran karné vaalé, atyant sundar goll-kappollo vaalé, vrajaang naavo ké priyatam param durlabh Shri Krishna Bhagwan ko mera namaskar hé. Gvaal baal orr Shri Nandrai ji ké sahit modd-mai Yashodaji ko anand dené vaalé, Shri Gop-Nayak ko mera namaskar hé.

सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं,
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं,
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्॥४॥

भावार्थ—जिन्होंने मेरे मनरूपी सरोवर में अपने चरणकमलों को स्थापित कर रखा है, उन अति सुन्दर अलकों वाले नन्दकुमार को नमस्कार करता हूँ तथा समस्त दोषों को दूर करने वाले, समस्त लोकों का पालन करने वाले और समस्त ब्रजगोपों के हृदय तथा नन्दजी की वात्सल्य लालसा के आधार श्रीकृष्णचन्द्र को नमस्कार करता हूँ।

SADEIV PAAD PANKAJAM, MADEEYA MAAN SÉ NIJAM
DADHĀN MUT MĀLAKAM, NAMĀMI NAND BĀLAKAM
SAMAST DOSH SHOSHANAM, SAMAST LOK POSHANAM
SAMAST GOP MAANASAM, NAMĀMI NAND LAALASAM(4)

Meré hriday mé sadda apné charan-kamalo ki sthaapna karné vaalé, sundar ghungharaali alko vaalé Nandlal ko mé namaskar karta hu. Samast dosho ko bhasma kardené vaalé, samast lokko ka paalan karné vaalé, samast gopp kumaro ké rhaday tatha Shri Nandrai ji ki vaatsalya laalsa ké aadhaar, Shree Krishna ko mera namaskar hé.

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं,
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदा सदासिंसंगिनं,
दिने-दिने नवं-नवं नमामि नन्दसम्भवम्॥५॥

भावार्थ—भूमि का भार उतारने वाले, भवसागर से तारने वाले कर्णधार श्रीयशोदाकिशोर चित्तचोर को मेरा नमस्कार है। कमनीय कटाक्ष चलाने की कला में प्रवीण सर्वदा दिव्य सखियोंसे सेवित, नित्य नए-नए प्रतीत होने वाले नन्दलाल को मेरा नमस्कार है।

BHUVO BHARAAV TĀRAKAM, BHAVĀBHDHI KARNA DHĀRAKAM
YASHOMATI KISHORKAM, NAMĀMI CHITT CHORAKAM
DRIGANT KĀNT BHANGINAM, SADĀ SADĀLI SANGINAM
DINÉ DINÉ NAVAM NAVAM, NAMĀMI NAND SAMBHAVAM(5)

Bhoomi-bhaar utaarné vaalé, bhavsagar sé taarné vaalé, karnadhar Shree Yashoda Kishor Chitchor ko mera namaskar hé. Kamniy(a) kataksh chalaané ki kalla mé pravin, sarvadda divya sakhiyo sé sevit, nitya nayéh nayéh prattit honé vaalé, Nandlal ko mera namaskar hé.

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं,
सुरद्विषन्निन्दनं नमामि गोपनन्दनं।

नवीन गोपनागरं नवीनकेलि-लम्पटं,
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्॥६॥

भावार्थ—गुणों की खान और आनन्द के निधान कृपा करने वाले तथा कृपा पर कृपा करने के लिए तत्पर देवताओं के शत्रु दैत्यों का नाश करने वाले गोपनन्दन को मेरा नमस्कार है। नवीन-गोप सखा नटवर नवीन खेल खेलने के लिए लालायित, घनश्याम अंग वाले, बिजली सदृश सुन्दर पीताम्बरधारी श्रीकृष्ण भगवान को मेरा नमस्कार है।

GUNĀ KARAM SUKHĀ KARAM, KRIPĀ KARAM KRIPĀ PARAM
SURA DVISHAN NIKANDANAM, NAMĀMI GOP NANDANAM
NAVEEN GOP NĀGARAM, NAVEEN KELI LAMPATAM
NAMĀMI MEGH SUNDARAM, TADIT PRABHĀ LASAT PATAM(6)

Gunno ki khaani orr anand ké nidhaan, krupa karné vaalé tatha kripakar (arthat kripa karné ké liyé tattpar), devtao ké shatru daityo ka naash karné vaalé, Gopp Nandan ko mera namaskar hé. Navin gopp sakha natwar navin navin khel khelné ké liyé laalaayit, ghanshyamal angé vaalé orr bijli saddarsh sundar pitambar Shri Krishna Bhagwan ko mera namaskar hé.

समस्त गोप मोहनं, हृदम्बुजैक मोदनं,
नमामिकुंजमध्यगं प्रसन्न भानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं,
रसालवेणुगायकं नमामिकुंजनायकम्॥७॥

भावार्थ—समस्त गोपों को आनन्दित करने वाले, हृदयकमल को प्रफुल्लित करने वाले, निकुंज के बीच में विराजमान, प्रसन्नमन सूर्य के समान प्रकाशमान श्रीकृष्ण भगवान को मेरा नमस्कार है। सम्पूर्ण अभिलिषित कामनाओं को पूर्ण करने वाले, वाणों के समान चोट करने वाली चितवन वाले, मधुर मुरली में गीत गाने वाले, निकुंजनायक को मेरा नमस्कार है।

SAMAST GOP MOHANAM, HRIDAM BHUJÉIK MODANAM
NAMĀMI KUNJ MADHYAGAM, PRASANN BHĀNU SHOBHITAM
NIKĀM KAAM DĀYAKAM, DRIGANT CHĀRU SĀYAKAM
RASAAL VENU GĀYAKAM, NAMĀMI KUNJ NĀYAKAM(7)

Samast goppo ko mohit karné vaalé, rhaday kamal ko praffullit karné vaalé, nikunj ké beech biraajmaan, prassan surya ké samaan prakashmaan, Shri Krishna Bhagwan ko mera namaskar hé. Sampurna abhilaashit kaamanao ko çott (chott)

karné vaali chitvan vaalé, madhur murli mé geet gaané vaalé, Nikunj Naayak ko mé namaskar karta hu. (note: 'c' is prounounced as 'ch' in church).

विदग्ध गोपिकामनो मनोजतल्पशायिनं,
नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम्।
किशोरकान्ति रंजितं दृगंजनं सुशोभितं,
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्॥८॥

भावार्थ—चतुरगोपिकाओं की मनोज तल्प पर शयन करने वाले, कुंजवन में बड़ी हुई विरह अग्नि को पान करने वाले, किशोरावस्था की कान्ति से सुशोभित अंग वाले, अंजन लगे सुन्दर नेत्रों वाले, गजेन्द्र को ग्राह से मुक्त करने वाले, श्रीजी के साथ विहार करने वाले श्रीकृष्णचन्द्र को नमस्कार करता हूँ।

VIDAGDH GOPI KĀMANO, MANOGYA TALPA SHĀYINAM
NAMĀMI KUNJ KĀNANÉ, PRAVRUDDH VAHNIH PAAYINAM
KISHOR KĀNTI RANJITAM, DRIGAN JANAN SHUSHOBHITAM
GAJENDRA MOKSH KĀRINAM, NAMĀMI SHRI VIHĀRINAM(8)

Āatur gopp-kaavo ké mann ki manoram-shaiya par shayan karné vaalé, kunj-van mé baddhi hui (birah) agni ko paan karné vaalé, tatha Shree Vrashbhanu Kishori ki anga kaanti sé jinké anga jhalak rahé hé, jinké netro mé anjann shobha dé raha hé, joh Gajjraaj ko moksh dené vaalé tatha Shreeji ké saath vihaar karné vaalé hé, aésé Shri Krishna Bhagwan ko mera namaskar hé.

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा,
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्,
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्॥९॥

प्रभो! मेरे ऊपर ऐसी कृपा हो कि जहां-कहीं जैसी भी परिस्थिति में रहूँ, सदा आपकी सत्कथाओं का गान करूँ। जो पुरुष इन दोनों-राधा कृपाकटाक्ष व श्रीकृष्ण कृपाकटाक्ष अष्टकों का पाठ या जप करेगा, वह जन्म-जन्म में नन्दनन्दन श्यामसुन्दर की भक्ति से युक्त होगा और उसको साक्षात् श्रीकृष्ण मिलते हैं।

YADĀ TADĀ YATHĀ TATHĀ, TATHĒIV KRISHNA SAT KATHĀ
MAYĀ SADĒIV GĒEYATĀM, TATHĀ KRIPĀ VIDHI YATĀM
PRAMĀNITAM STAVA DVAAYAM, PATHANTI PRĀT RUT-THITAAH
TA-EV NAND NANDANAM, MILANTI BHAHV SANSTHITAAH.

Jahaa kahi bhi jesi paristhiti mé, mé rahu, sadda Shri Krishnachandra ki saras katha-voh ka meré dhwaara sarvadda maan hota rahé, bas aesi kripa bani rahé. ,Shri Krishna Kripa Kataksh Stotra` tatha ,Shree Radha Kripa Kataksh Stotra` in dono sidh stotro ko joh praatahkaal utth kar bhakti bhaav me sthit hokar nitya path karté hé, unko hi shakshaat Shri Krishnachandra milté hé



हमारी विरासत

ब्रह्मकार से प्रकृति की ओर का संपर्क